रेखाचित्र : स्वरूप, परिभाषा एवं तत्व

डॉ. गरिमा तिवारी
(सहायक प्राध्यापक)
हिंदी विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी - ८४५४०१, बिहार
E-mail: garimatiwari@mgcub.ac.in

HIND3009: कथेतर हिंदी गद्य विधाएँ : एक

विषय-सूची

- रेखाचित्र का स्वरुप
- रेखाचित्र की परिभाषा
- रेखाचित्र और संस्मरण में अंतर
- रेखाचित्र के तत्व
- निष्कर्ष

रेखाचित्र का स्वरुप

- रेखाचित्र हिंदी साहित्य की नवीन गद्य विधा है।
- रेखाचित्र शब्द ‘रेखा’ और ‘चित्र’ के संयोग से बना है। जिसका अर्थ है – ‘रेखाओं से बना हुआ चित्र’। जिस प्रकार चित्रकार रंगों से चित्र उपस्थित करता है उसी प्रकार रचनाकार भी शब्दों के माध्यम से किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या स्थान का मर्मस्पर्शी एवं प्रभावशाली चित्र उपस्थित करता है।
- कुछ विद्वान ‘रेखाचित्र’ के लिए ‘शब्दचित्र’ का प्रयोग करने के पक्षधर हैं लेकिन ‘रेखाचित्र’ शब्द ही इस विधा के लिए अधिक उपयुक्त एवं व्यापक जान पड़ता है।
- रेखाचित्र व्यक्ति एवं व्यक्त्येत्तर दोनों विषयों पर लिखे जा सकते हैं।

- रेखाचित्र जीवन के यथार्थ पर अवलम्बित होते हैं अतः रेखाचित्रकार कल्पना के प्रयोग के लिए स्वतंत्र नहीं होता है।

- रेखाचित्रकार तटस्थ होकर किसी एक व्यक्ति, घटना, स्थान, दृश्य या उपादान का चित्रात्मक अंकन करता है।

- रेखाचित्र सरल, सुगठित, वर्णन प्रधान, विषय प्रधान तथा संक्षिप्त विधा है।

- रेखाचित्र 'गागर में सागर' भरने की क्षमता से संपन्न विधा है इसीलिए अधिक प्रभावशाली एवं लोकप्रिय है।

रेखाचित्र की परिभाषा

- रेखाचित्र के भिन्न-भिन्न पक्षों के आधार पर कई विद्वानों ने अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं जो निम्न हैं -

  रामवृक्ष बेनीपुरी – "ये चलते फिरते आदमियों के शब्दचित्र हैं ।"

  बनारसीदास चतुर्वेदी – "रेखाचित्र खींचना एक कला है । थोड़ी सी रेखाओं के द्वारा एक सजीव चित्र बना देना किसी कुशल कलाकार का ही काम हो सकता है ।"

  महादेवी वर्मा – "रेखाचित्र में लेखक कुछ गिनी चुनी रेखाओं के स्थान में शब्दों को रखकर तटस्थ भाव से किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व स्पष्ट कर सकता है, आवश्यक नहीं कि व्यक्ति अतीत का ही हो और लेखक के भावजगत में उसने पुनर्जन्म पाया हो । ....मनुष्य आकार मात्र नहीं है, वरन एक विशाल विचार और भाव जगत का सुपुन्जन है । रेखाचित्रकार किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को कुछ रेखाओं से बिना रंगों की छाया के व्यक्त कर सकता है ।"

धीरेन्द्र वर्मा – "रेखाचित्र किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम-से-कम शब्दों में मर्मस्पर्शी, भावपूर्ण एवं सजीव अंकन है। रेखाचित्र की विशेषता विस्तार में नहीं, तीव्रता में होती है।"

डॉ. नगेन्द्र – "जिस प्रकार चित्रकार चित्र में आड़ी-तिरछी पर अजीब रेखाओं का प्रयोग करता है, इसी प्रकार रेखा विलक्षण व्यक्तित्व वाले अथवा संवेदना जगाने वाली विशेषताओं से युक्त किसी का ऐसा अजीब चित्र उपस्थित करता है कि वह व्यक्ति, स्थान, वातावरण या प्रसंग साकार हो उठता है।"

- उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि रेखाचित्रकार कम से कम शब्दों से किसी भी व्यक्ति, वस्तु या घटना का ऐसा प्रभावशाली चित्रण करता है कि वह व्यक्ति, घटना या वस्तु सजीव हो उठती है।

रेखाचित्र और संस्मरण में अंतर

- रेखाचित्र और संस्मरण दोनों ही आधुनिक हिंदी साहित्य की नवीन गद्य विधाएँ हैं। जिनकी विभाजक रेखा अत्यंत सूक्ष्म है।

- रेखाचित्र और संस्मरण के विषय में यद्यपि बनारसीदास चतुर्वेदी ने कहा है कि "संस्मरण, रेखाचित्र और आत्मचरित्र इन तीनों का एक दूसरे से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध है कि एक की सीमा दूसरे से कहाँ मिलती है और कहाँ अलग हो जाती है इसका निर्णय करना कठिन है।" फिर भी कुछ विशेषताएँ ऐसी हैं जो रेखाचित्र को संस्मरण से अलग करती हैं जो निम्न हैं –

  – रेखाचित्र और संस्मरण में मूलभूत अंतर यह है कि रेखाचित्र अतिसामान्य विषयों पर भी लिखे जा सकते हैं जैसे- धनी-निर्धन, साक्षर-निरक्षर, पशु-पक्षी, कोई भी रेखाचित्र का विषय हो सकता है लेकिन संस्मरण का विषय कोई प्रसिद्ध व्यक्ति या कोई विशेष घटना होती है।

– रेखाचित्र और संस्मरण को अलग करने वाली सबसे महत्वपूर्ण विशेषता चित्रात्मकता है। रेखाचित्र में चित्रात्मकता होती है जबकि संस्मरण विवरणात्मक होते हैं।

– रेखाचित्र में किसी व्यक्ति, घटना, स्थान, वस्तु का हुबहू यथार्थ चित्रण होता है जबकि संस्मरण स्मृति पर आधारित होते हैं।

– रेखाचित्र अतीत, वर्तमान एवं भविष्य तीनों से संबंधित हो सकता है जबकि संस्मरण का संबंध सिर्फ अतीत से होता है।

– संस्मरण में लेखक को अपनी कल्पना शक्ति के प्रयोग का अवसर नहीं मिलता क्योंकि उसे उन्ही घटनाओं का वर्णन करना होता है जो वास्तव में घटित हो चुकी हैं जबकि रेखाचित्रकार कल्पना शक्ति के प्रयोग में स्वतंत्र होता है।

– रेखाचित्र में रेखाचित्रकार व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्रता में चित्रण करता है। उसके आतंरिक एवं बाह्य दोनों पक्षों पर प्रकाश डालता है जबकि संस्मरण में बाह्य वर्णन पर ही अधिक बल दिया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि रेखाचित्र, संस्मरण विधा से कतिपय समानताओं के बावजूद अपना अलग अस्तित्व रखता है।

रेखाचित्र के तत्व

- किसी भी विधा का स्वरुप निर्धारित करने में उसके तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः रेखाचित्र के भी कुछ महत्वपूर्ण तत्व हैं जो उसे एक सफल एवं सार्थक विधा का स्वरुप प्रदान करते हैं।

- रेखाचित्र के निम्नलिखित तत्व हैं –
  1. यथार्थपरकता
  2. विषय केन्द्रीयता
  3. संवेदनशीलता
  4. गतिशीलता
  5. संक्षिप्तता
  6. तटस्थता
  7. चित्रात्मकता

निष्कर्ष

- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि रेखाचित्र आधुनिक युग की महत्वपूर्ण गद्य विधा है जिसने कम समय में ही अधिक लोकप्रियता हासिल की है।

  डॉ. सुरेश कुमार जैन के मतानुसार –

  "रेखाचित्र चित्रकला का शब्द है। रेखाचित्र में चित्रकार कुछ आड़ी-तिरछी रेखाओं के माध्यम से इच्छित वस्तु अथवा व्यक्ति का ऐसा चित्र उपस्थित कर देता है जिससे उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व हमारे समक्ष उपस्थित हो जाता है। किन्तु साहित्य के क्षेत्र में 'रेखाचित्र' शब्द ने विशिष्ट अर्थ के साथ प्रवेश किया है।"

- इससे स्पष्ट है कि यह विधा हिंदी साहित्य की अन्य गद्य विधाओं में अपना अलग एवं विशेष स्थान रखती है।

धन्यवाद